प्रातःक्लास 15-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

****

ओमशान्ति। रूहानी बच्चो प्रति। सिर्फ रूह कहेंगे तो श्री जीव निकल जाता। इसलिए रूहानी बच्चों बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं। अपन को आत्मा समझना है। हम आत्माओं को बाप से यह नालेज मिलती है। बच्चों कोदेही अभिमानी हो रहना है। बाप आये ही हैं बच्चों को ले जाने लिए। भल सतयुग में तुम ही आत्माभिमानी रहते हो परन्तु परमात्माअभिमानी नहीं। यहां तुम आत्म-अभिमानी भी बनते हो तो परमात्मा अभिमानी (अर्थात हम परमात्मा बाप के सन्तान) भी बनते हो। यहां और वहां में बहुत फर्क रहता है। यहां तो है पढ़ाई। वहां पढ़ने की कोई बात नहीं। यहां हरेक अपन को आत्मा समझते हो। और बाबा हमको हमको पढ़ाते हैं। इस निश्चय में रह कर सुनेंगे तो धारणा भी अच्छी होगी। आत्मा-अभिमानी बनते जावेंगे। इस अवस्था में टिकने की मंजिल बहुत बड़ी है, घड़ी2 भूल जाते हैं। बाप तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रह कर अपन को आत्मा समझो। मंजिल बहुत बड़ी है। सुनने में तो बहुत सहज लगती है। बच्चों को यही अनुभव सुनाना है कि मैं कैसे अपन को आत्मा समझ दूसरे को भी आत्मा समझ बात करते हैं। इसमें मेहनत चाहिए। बाप कहते हैं मैं भल इस शरीर में हूं परन्तु मेरी यह असल कीप्रेक्टीस है ही। मैं बच्चों को आत्मा ही समझता हूं। आत्माओं को पढ़ाता हूं। भक्ति-मार्ग में भी आत्मा पार्ट बजाती है। पार्ट बजाते2 पतित बनी है। अभी फिर आत्मा को पवित्र बनना है। सो जब तकबाप को परमात्मा समझ कर याद नहीं करेंगे तो पवित्र कैसे बनेंगे। इस पर बच्चों को बहुत अन्तर्मुख होयाद का अभ्यास सीखना है। नालेज तो बहुत सहज है। बाकी यह निश्चयपक्का रहे हम आत्मा पढ़ती है। बाबा हमको पढ़ाते हैं। तो धारणा भी होगी और कोई भी विकर्म न होगा। ऐसे नहीं कि इस समय तुम से कोई विकर्म नहीं होते हैं। विकर्माजीत तो अन्त में होंगे। भाई2 की दृष्टि बहुत मीठी रहती है। इसमें कब देह-अभिमान नहीं आवेगा। बच्चे समझते हैं बाप की नालेज बहुत ही डीप है। अगर ऊंच ते ऊंच बनना है तो यह प्रेक्टीस अच्छी रीत करनी पड़े। इस पर गौरव करना है। अन्तर्मुख होने लिए एकान्त भी चाहिए। यहां जैसे एकान्त। घर में वा घोरी-धंधे में मिल न सके। यहां तुम यह प्रेक्टीस बहुत अच्छी रीत कर सकते हो। आत्मा को आत्मा को ही देखना पड़े। अपन को भी आत्मा समझना है। यह प्रक्टीस यहां करने से फिर आदत पड़ जावेगी। अपने पास इसका चार्ट रखना चाहिए कहां तक आत्माभिमानी बुद्धि बने हैं। आत्मा को ही हम सुनाते हैं। उन से ही बात-चीत करते हैं। यह प्रेक्टिस बहुत अच्छी चाहिए। बच्चे समझते हैं यह बात तो बरोबर ठीक है। देह अभिमान निकल जाये और हम आत्माभिमानी बन जावें धारणा कर और कराते जावें। कोशिश कर अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना यह चार्ट बहुत ही डीप है। बड़े2 महारथी भी समझते होंगेबाबा दिन प्रति दिनजो सब्जेक्टस देते हैं विचार सागर मथन करने लिए यह तो बहुत2 बड़ीपायन्ट्स है। फिर कभी भी मुख से उल्टा-सुल्टाअक्षर नहीं निकलेंगे। भाईयों भाईयों का आपस में बहुत ही प्यार हो जावेगा। बाप की महिमा को तो जानते हो हो। कृष्ण की महिमा अलग है। उनको कहते हैं सर्वगुण सम्पन्न, 16कला सम्पूर्ण ... परन्तु कृष्ण के पास यह सफीयत भी कहां से आई। भल उनकी महिमा भी अलग है परन्तु सर्व गुण सम्पन्न बनतातो ज्ञान सागर से ही है ना। तो अपनी जांच बहुत रखनी पड़ती है। कदम2 पर पूरा पोतामेल निकालना है। व्यापारी लोग सारे दिन की मुखदी रात को सम्भालते हैं। तुम्हारा भी व्यापार है ना। रात को सोने समय अपनी जांच करनी है। हमने भाई भाई समझ कर बात-चीत की। कोई को भाई न समझ दुःख तो नहीं दिया। क्योंकि यह तो जानते हो हम सभी भाई क्षीर सागर तरफ जाते हैं। यह तो है विषय सागर। तुम अभी न रावण राज्य में हो न राम राज्य में हो। तुम बीच में हो। तो अपन को आत्मा समझ बाप को करने कापुरुषार्थ करना है। देखना है कहां तक हमारी वह अवस्था रहती है। भाई2 की दृष्टि रहे। सभी भाई2 हैं। इस शरीर से पार्ट बजाते हैं। आत्मा जानती है यह शरीर विनाशी है। आत्मा अविनाशी है। हम ने 84 जन्म का पार्ट बजाया। अभी फिर बाप आये हैं। कहते हैं मामेकं याद करो। अपन को आत्मा समझो। आत्मा समझने से भाई2 हो जाते हैं। बाप के सिवाय

और कोई का पार्ट नहीं। प्रेरणा आद की तो बात ही नहीं। जैसे टीचर बैठसमझाते हैं वैसे ही बाप बच्चों को समझाते हैं। यह बिचार की बात है ना। इसमें टाईमदेना पड़ता है। बाप ने धंधा आद करने लिए तो कह दिया है लेकिन याद की यात्रा भी जरूरी है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। इसके लिए टाईम चाहिए। टाईम निकालना भी चाहिए। सर्विस भी सभी को भिन्न है। कोई टाईम निकाल सकते हैं। जैसे जगदीश बहुत टाईम निकाल सकते हैं बहुत ही प्रेक्टीस कर सकते हैं। मैगजीन में भी शिक्षा दे सकते हैं। इसमें भी ऐसी युक्ति से लिखना चाहिए कि यहां हमको बाप को ऐसे याद करना होता है। एक दो को भाई2 समझना होता है। बाप आकर सभी आत्माओं को पढ़ाते हैं। आत्मा में देवी गुणों के संस्कार अभी भरनी है।

मनुष्य पूछते हैं भारत का प्राचीन योग क्या है। तुम समझा सकते हो। परन्तु तुम अभी बहुत थोड़े हो। तुम्हारा नाम निकला नहीं है। ईश्वर योग सिखाते हैं तो जरूर उनके बच्चे भी होंगे। वह भी जानते होंगे। यह किसको भी पता नहीं है कि निराकार बाप कैसे आकर पढ़ाते हैं। वह खुद ही समझाते हैं। मैं कल्प2 संगम युगे पर आजाता हूं। आकर सुनाता हूं कि मैं ऐसे आता हूं। किसके तन में आता हूं। इसमें भी मुंझने की कोई बात नहीं। यह बना बनाया ड्रामा है। एक में ही आते हैं। राईट बात तो एक ही है। प्रजापिता ब्रहमा द्वारा स्थापना वही मुखबंश पहले2 बनते हैं। आदी सनातन देवी देवता धर्म स्थापन करते हैं। फिर वही पहले नम्बर में आते हैं। इस चित्र से परसमझानी बहुत अच्छी है। ब्रहमा से विष्णु, विष्णु से ब्रहमा कैसे बनते हैं, यह और कोईसमझा न सके। समझान की भी युक्ति है ना। अभी तुम समझते हो बाप कैसे आदी सनातन देवी देवताधर्म की स्थापना करने आते हैं। कैसे चक्र फिरता है। इन बातों को और कोई नहीं जान सकते हैं। तो बाप कहते हैं ऐसे ऐसी युक्ति से समझाओ, लिखो। यथार्थयोग कौन सिखला सकते है। यह मनुष्यों को मालूम पड़ जाये तो तुम्हारे पास ढेर आ जायेंगे। इतने बड़े2 आश्रम जो बने हैं वह सभी हिलने ले पड़ेंगे। पिछाड़ी को तो होना ही है। फिर वन्डर खावेंगे। इतने सभी जोसंस्थाएं हैं वह सभी भक्ति मार्ग के हैं। ज्ञान मार्ग के एक भी नहीं। तब ही तुम्हारी विजय होगी। यह भी तुम जानते हो हर 5000वर्ष बादबाप आते हैं। बाप द्वारा तुम सीखते और फिर सिखाते रहते हो। कैसे किसको सम्मुख समझावें, कैसे लिखत में समझावें। कल्प2 ऐसे ही चलते2 पिछाड़ी को एसी युक्ति निकलती है जो बहुतों को पता पड़ जाता है। सिवाय बाप के धर्म की स्थापना कोई कर न सके। तुम समझते हो उस तरफ रावण और राम। रावण पर तुम जीत पहनते हो। वह सभी है रावण के सम्प्रदाय। तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय केकितने थोड़े हो। भक्ति मार्ग का कितनाप्रचार है। कितना शो है। जहां पानी है वहां मेले लगते हैं। कितना खर्चा होता है। कितने डूबते हैं। मरते हैं। यहां तो वह बात नहीं। फिर भी बाप कहते हैं आश्चर्यवत मेरे को पहचानती सुनती सुनावन्ती पवित्र रहन्ती फिर भी अहो माया तेरे द्वारा हार खावन्ती। कल्प2 ऐसे होता है। हार खावन्ती भी होते हैं। माया के साथ युध है ना। महाभारत का भी कितना प्रभाव है। यह सभी है भक्ति। भक्ति को तो चलना ही है। आधा कल्प तो तुम प्रारब्ध भोगते हो। फिर आधा बाद रावण राज्य से भक्ति मार्ग शुरू होता है। उनकी निशानियां भी कायम है। विकार में जाते हैं फिर देवतायें तो कहेंगे नहीं। कैसे वह विकारी बनते हैं-दुनिया में यह भी कोई नहीं जानते। शास्त्रों में भी लिख दिया है देवतायें वाममार्ग में गये। कब गये यह नहीं समझते हैं। यह सभी बातें अच्छी रीत समझने समझाने की है। वह भी तब समझे जब कि पहले निश्चय बुधि हो। निश्चय बुधि वाले को झट कशिश होगी। तुमको कहते हैं ऐसे बाप से तो हमको मिलाओ। परन्तु पहले देखो घर जाते हैं वह नशा रहता है। निश्चय बुधि रहते हैं। मन याद सताती रहे। चिट्ठी लिखते रहे। आप हमारे बाप हो। आप से हमको इतना ऊंच वर्सा मिलता है तो हम क्यों न आप से मिलें। आप से मिलने बिगर हम रह नहीं सकते हैं। सगाई के बाद मिलना होता है ना। कुमारी की सगाई हुई फिर अन्दर तरफती रहती है। तुम भीसमझते हो

वह हमारा बेहद का बाप है। टीचर, पति, चाचा मामा काका आदसभी सम्बन्ध एक से ही हैं। और सभी से तो दुःख ही मिलता है। उनके एवेजे में बाप सभी सुख देते हैं। भल वहां कर के फैमली कम होती है परन्तु सभी सुख देने वाले ही होते हैं। तुम सुख के सम्बन्ध में बान्ध रहे हो। पहले दुःख के बन्धन में थे। अभी सह है पुरुषोत्तम बनने का पुरुषोत्तम संगम युग ही अलग है। मनुष्यों की बुधि में आधा कल्प से शास्त्रों आद की बातें जो बुद्धि बैठी हुई है वह निकलती ही नहीं है। पड़ी2 भूल जाते हैं। मूल बात है अपने को आत्मा बाप को बहुत ही प्यार से याद करना। याद से ही खुशी का पारा चढ़ेगा। भक्ति तो करते आये हैं। हम ने ही एक से जाती भक्ति की है। तरफते2 धक्के खाते मिला है। अभी बाप आये ही है वापस ले जाने लिए। तो जरूर पवित्र भी बनना है। देवी गुण भी धारण करनी है। सारे दिन का पोतामेल रात को निकालना है। आज सारे दिन में कितने को बाप का परिचय दे दिया। बाप के परिचयदेने बिगर सुख नहीं आता। जैसे कि तरफन लग जाती है। भल असुर लोग हैं। विघ्न भी बहुत पड़ते हैं। कितनी मारें खाती हैं। और कोई भी प्रजा सतयुग में पवित्रता की बात ही नहीं। यहां तुम पवित्र बनते हो तो कितने विघ्न डालते हैं। पावन बन कर वापस जाना ही है। यह भी तुम जानते हो संस्कार आत्मा ले जाती है। कहते हैं जो युध के मैदान में मरेंगे वह स्वर्ग में जावेंगे। इसलिए बहुत ही खुशी से लड़ाई में जाते हैं। अभी स्वर्ग है कहां। बाकी हां संस्कार ले जाते हैं तो फिर शरीर छोड़ लड़ाई के मैदान में ही चले जाते हैं। तुम्हारे पास देखो कमान्डर मेजर, सिपाही आद कहां2 आते हैं। सचमुच स्वर्गमें कैसे जावेंगे यह कोई भी समझते नहीं। युध के मैदान में तो उन को अपने मित्र-सम्बन्धी आद ही याद आते रहेंगे। अभीबाप कहते हैंकि अभी सभी को वापस जाना है। मुझे याद करो अपनको आत्मा भाई समझो। सभी आत्माओं को एकबाप से ही वर्सा मिलता है। जो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना उच्च पद पावेंगे। भाई 2 की दृष्टि पक्की रखनी है। वहलोग भी कहते हैं हम सभी भाई2 हैं परन्तु इसका अर्थ कोई भी समझते नहीं हैं। तुम अभी कितने समझदार बनते हो। यह है बेसमझ। भाई2 काअर्थ नहीं समझते हैं। बाप को नही जानते। इनको ठिकर भितर कुत्ते बिल्ली सब में ठोक दिया है। इसलिए बाप ने कहा है गीता में यदा यदा ... इसका भी अर्थ उन से तुम पूछो बिलकुल ही नहीं जानते। भगवान को दिखा कर इसकी तो बहुत ही सजा मिलनी है चाहिए। मनुष्य समझते हैंहम निकामसेवा करते हैं। हमको फल की भी इच्छा नहीं है। परन्तु फल तो आटोमेटकली लिता ही है। निष्काम सेवा तो एकही बाप करते हैं। बच्चे भी समझते हैं हम बाप की कितनी ग्लानी करते आये हैं। बाप की भीग्लानी देवताओं की भी ग्लानी कर दी है। ऐसी2 ग्लानी की शास्त्र इकट्ठी करनी चाहिए। एक मैगजीन भी जो कृष्णको चक्र दिखाया है। सभी को मारते रहते हैं। जैसे शंकराचार्य ने कहा है नारि नर्क का द्वार है। ऐसे2 किताब हाथरखनी चाहिए समझाने लिए। यहां तुम डबल अहिंसक हो। न काम कटारी चलाना न क्रोध करना। क्रोध भी विकार है। लिखते हैं बाबा हमने बहुत गुसा किया। बाबा समझाते हैं थप्पर आद न मारो। यह भी भाई हैना। इन मे भी आत्मा है आत्मा तो छोटी बड़ी हो नहीं सकती। यह बच्चानहीं छोटा भाई है। आत्मा के रूप में समझना है। छोटे भाई को थोड़े ही मारना चाहिए। इसलिए कृष्ण को भी दिखाते हैं उनको मारा नहीं। मारना तो क्रोध की निशानी है। उनको उखड़ीसे बांधा यह किया। परन्तु ऐसी बात है नहीं। यह सभी शिक्षाएं हैं भिन्न2रूप में। बाकी वहां कृष्ण को क्या प्रवाह रखी है मक्खन आद की। बातें जो महिमा की दिखाई है सभी उल्टी। अभी तुम सुल्टी महिमा करेंगे। सर्व गुण सम्पन्न ... वह कहेंगे कैसे चोरी की यहांकिया। उनको भगाया। सारी उल्टीबातें। महिमा के बदली ग्लानी कर दी है। यह भी ड्रामा मे नूंध है। यह समीसमझना होता है। अभी सभी तमोप्रधान हो गये हैं। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। फिर बाप आकर तमोप्रधानसे सतोप्रधान बनाते हैं। युक्ति तो बहुत ही सहज है। पढ़ाने वाला है बेहद का बाप। तो उनकी मत पर चलना पड़े। डिफीकल्ट तें डिफीकल्ट यहसबजेक्ट है।

पद भी तुम कितना ऊंच पद पाते हो। अगर सहज हो तो सभी इस इम्तहान मे लग जाये। तुम समझते हो इसमें बड़ी मेहनतलगती है। देहाभिमान मे आने से कुछ न कुछ विकर्म बन जाता है। इसलिए छूई-मुई का दृष्टान्त दिया है। बाप को याद करने से तुम खड़े रहेंगे। भूलने से कुछ न कुछ भूलें हो जावेंगा। पदभी कम होजाता है। शिवा ने सभी की दी है। जिसकी फिर बाद में गीता वेद बनाई है। रामायण गरुड़पुराण आद कितने शास्त्र हैं। गरुड़ पुराण में भी रोचक बातें दिखाई हैं। तो मनुष्यों को डर रहेगा ऐसे पाप करनेसे ऐसे2 जन्म बनेंगे। रावण राज्य में पाप तो होते ही हैं। कांटों से भी भेंट की जाती है। यहकांटों का जंगल है ना। बाप कहते हैं दृष्टि को भी बदलना है। बहुतों की दृष्टि वही रहती है। बहुत समय के हीरे हुये हैं ना। अच्छे2 स्टुडन्ट भी जिसका मुंह देखते रहेंगे, शरीर तरफ प्यार चला जाता है। विनाशी चीज़ से प्यार रखने से फायदा हो क्या। अविनाशी साथ प्यार रखने से वह भी अविनाशी बन जाता है। बच्चों को उठते-बैठते चलते एक बाप को ही याद करना है। कैसे औरों को समझावें। गंगा का पानी तो पतित पावनी है नहीं। उनमें तो नालो का गंदा कचरा आद पड़ता रहता है। स्वच्छ होकर पहाड़ों से आती है फिर मलेच्छ होकर सागर में जातेहैं। जो भी नदी पहाड़ से निकलती है वह बहुत ही स्वच्छ होती है। बरफकितनी स्वच्छ होती है। एकदम साफ। गिरी जोज्यर गिरती है सब से शुध होती है। डाक्टर लोग वह बहुत इकट्ठे करते हैं। वह है बिलकुलशुध पानी। यहां तो अपनी आत्मा को स्वच्छ बनानाहै। पवित्रको वैष्णव कहा जाता है। आदी सनातन धर्म के वैष्णव कुल के पवित्र थे। परन्तु अभी तोपवित्र नहीं हैं। अभी तो विकारी है ना। उनको वैष्णव नहीं कहेंगे। वेजीटेरियन हैं। पावन नहीं, पतित हैं। भार खाने वाले कोवैष्णव नहीं कहेंगे। कैसे2 पतित मनुष्य होते हैं। तुमको तो पावन बनना है। वैष्णव कुल के तुम सतयुग मे जाकर बनते हो। दूसरे कोई तो हो भी न सके। भारतवासी ही वैष्णव कुल के हैं। परन्तु पवित्र न होने कारण उन्हों को वैष्णवनहीं कहा जाता। मूल बात हेयाद को। बाप को याद किया तो वर्सा जरूर या आवेगा। जितना याद करेंगे उतना वर्सा भी मिलेगा। बाप समझाते भी बहुत सहज है। अल्फ माना अल्ला। बे माना बादशाही। बस। और कोई तकलीफ नही देते। तुम बेहद के बाप के पास आये हो वर्सा लेने। यह है अलौकिक बाप। इन द्वारा ही तुमको वर्सा मिलता है। तुमको याद इनको नहीं करना है। इनका फोटो रखने का भी दरकार नहीं। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। सन्यासी लोगतो अपना लाकेट आद दे देते हैं। याद करने लिए। यह तो ऐसे कहते नहीं हैं। वहबाप कहते हैं मामेकं याद करो। वर्सा तुमको एक ही बाप से मिलता है। वह बेहद का बाप कितना लवली है। बाकी तो सभी हैं दुःख देनेवाले। यह एक ही बाप सभी के बदलीसुख देते हैं। सभी को सुख देते हैं। और कोई यह सुख दे न सके। सीढ़ी तो नीचे ही उतरते हैं। ऊपर तो कोई जाते ही नहीं हैं। तुम्हारी बुधि में भी अभी सारा चक्र है। यह चक्र और झाड़। इन-मेंसभी-मेंसभी धर्म वालों का आ जाता है। सीढ़ी में सभी धर्मवालों का नहीं आता है। वह सीढ़ी से इतना नहीं समझेंगे। सीढ़ी भारतवासियों की 84 जन्मों की है। उन्हों को फिर गोला और झाड़ दिखाना है। यह त्रिमूर्ति और चक्र है मुख्य। मुख्य बात भी बाप समझाते रहते हैं अपन को आत्मा समझना है। अपन को आत्मा समझने से शुध प्रेम हो जावेगा। भाई बहिन समझने से भी काम नहीं चलता है। तब ही बाप कहते हैं भाई2 समझो। इसमें है मेहनत। बाकी ज्ञान तो बहुत ही सहज है। बाप जो समझाते हैं वह फिर औरों के लिए युक्ति से लिखना है तो बुधि में टीक सके। जब कोईसमझे तब कहेंगे यह ज्ञान तो बिलकुल राईट है। सिंपलिटरेचर से कोई का समझना मुश्किल है। दिन प्रति दिन तुम्हारा नाम हो जावेगा। समझेंगे बरोबर कोई भी मनुष्य प्राचीन योग सिखाये नहीं सकते। वह लोग तो थपोड़ा मारते रहते हैं। फलाना ब्रहम में लीन हो गया। बाप समझाते हैं वापस कोई भी जाता नहीं। सभी आते रहते हैं। सभी ड्रामा के बन्धन में बांधे हुये हैं। शंकर की बारात नहीं। शिव की बारात है। कैसे सभी जाते हैं। जैसे मक्खियों की रानी आगे जाती है सारा झुण्ड उनके पिछाड़ी जाती है। कितना मानारा होता है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग। नमस्ते।